"भयंकर बाढ़"

स्वामी रामस्वरूपजी, योगाचार्य
वेद मन्दिर, योल कैम्प,
कांगड़ा (हि.प्र.)

इस युग में बाढ़ आने का सिलसिला ज़ोरों पर है। पानी की बाढ़, भूकम्प की बाढ़, एड्स आदि नए-नए रोगों और मानसिक तनावों तथा नशाखोरी की बाढ़, उग्रवाद, भ्रष्टाचार, नारी अपमान सहित भ्रष्ट राजनीति की बाढ़, बसन्त ऋतु में प्रतिवर्ष वृक्षों पर नवपल्लव पुष्प आने के समान नए-नए नेता, पार्टियों एवं समाज सुधारक संस्थाओं की बाढ़, तस्करी एवं नई-नई तकनीक से किए नए-नए अपराधों की बाढ़, ~~तस्करी~~ प्रदूषण वा कृषि भूमि पर होटल, दुकान वा भवन निर्माण की बाढ़, मत-मतांतर, जात-पात एवं गरीबी, पॉप संगीत, अश्लील फिल्में एवं दूर- ~~दर्शन~~ दर्शन पर धारावाहिकों की बाढ़। अब और क्या कहें, जैसे गिरगिट को देखकर गिरगिट रंग

बदलता है इसी तरह इन सब बाढ़ों को देखते-देखते धर्म गुरु भी किसी से कम नहीं हैं क्योंकि पूरे देश में इस समय धर्मगुरुओं की भी भीषण बाढ़ आ चुकी है। पिछले 68 वर्षों में गुरु गद्दियों में से ही एक नदी से टूट-फूट कर निकली कई धाराओं के समान आई गुरुओं की बाढ़ सचमुच चौंकाने वाली है। इस बाढ़ में भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के बह जाने और उसके नामो-निशान मिट जाने का खतरा अपनी चरम सीमा पर है। भारतीय अनादि संस्कृति पर दृष्टि डालें तो वेदानुसार और योग शास्त्र सूत्र 1/26 के अनुसार भी -

"स एषः पूर्वेषामपि गुरुः"

अर्थात् जिस परमेश्वर से सृष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान उत्पन्न होता है, वह ही हमारा प्रथम गुरु है।

उसके पश्चात् वेद के ज्ञाता, ऋषि-मुनि हमारे

गुरु होते आए हैं और ऐसे महान् कपिल मुनि, गुरु वसिष्ठ, व्यासमुनि जी आदि गुरुजनों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती थी/है। परन्तु इतिहास गवाह है कि अब तो महाभारत काल के पश्चात् अचानक वेद विरुद्ध गुरुओं की बाढ़ आ गई है और यह सभी जानते हैं कि बाढ़ कोई भी हो, प्राणघातक है एवं समाज में सब तरफ बर्बादी के चिन्ह छोड़ जाती है जिसका पुनः उत्थान अति कठिन सा बन जाता है। विज्ञान तथा गणित आदि विषय किसी विशेष निश्चित सूत्र का निर्माण करते हैं और उसी सूत्र पर आधार भूत होकर उन्नति करते हैं, परन्तु भीषण बाढ़ों का तो कोई दीन-ईमान अथवा निश्चित सूत्र ही नहीं होता। ये जिधर को मुँह करती हैं उधर-उधर ही अपना नया-नया रास्ता बनाकर तबाही का मन्ज़र ही पेश करती जाती हैं। यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि रोज़ाना की अखबारों एवं दूरदर्शन की खबरों तथा

विश्लेषण से यह जग - ज़ाहिर है कि नारी - रूप में अथवा पुरुष रूप में आई वेद - विरुद्ध गुरुओं की बाढ़ ने भी हमारे देश में मिथ्यावाद, अन्धविश्वास रूप तरह - तरह की पूजा आदि की आड़ में क्या - क्या पाप कर्म तथा बुराइयों के अनगिनत तोहफे हमें पेश किए हैं। ऐसी क्रोध, अन्याय एवं हिंसा रूपी कंकड़ - पत्थर, सोने - चाँदी के कण - रूप रेत से आशायुक्त एवं अहंकार - अभिमान तथा मद रूप पानी का उफान लिए, इस गुरुओं की बाढ़ ने अपने - अपने घाट बना लिए हैं। जैसे जंगल में प्यासा मृग सरोवर ढूंढ कर अपनी प्यास बुझा लेता है तथा अपनी प्राण रक्षा करके सन्तुष्ट होकर चला जाता है, इन बाढ़ निर्मित घाटों पर ऐसा कुछ नहीं होता। होता यह है कि यहां भी प्यासे मृग के समान जनता आध्यात्मिक ज्ञान से अपना दुःख समाप्त करने और कामना पूर्ति द्वारा तृप्त होने आती है परन्तु सनातन ज्ञान से अनभिज्ञ जनता बाढ़ की चपेट

में आकर तथाकथित गुरुओं के क्रोध, अन्याय एवं हिंसा रूपी कंकड़-पत्थरों से चोट ग्रस्त होकर, रेत रूप सोना-चाँदी, धन आदि की आशा किए बैठे गुरुजनों को चढ़ावा देकर, यूँ अपनी मेहनत की कमाई बर्बाद करके, अहंकार - अभिमान एवं मद से भरे तथाकथित गुरुजनों के ढोंग का शिकार तथा इस बाढ़ का शिकार होकर नर-नारी कभी-कभी तो अपना सबकुछ ही लुटा देते हैं। वर्तमान में यह, देश में तथाकथित गुरुओं की आई भीषण बाढ़ है।

क्या सरकार एवं जनता इस बाढ़ को रोक कर जनता को मिथ्यावाद, आडम्बर, अन्धविश्वास आदि मुसीबतों से बचाने का प्रयास करेगी अथवा इन गुरुओं की बाढ़ में हमारी अनादि, सनातन वैदिक संस्कृति बह जाएगी।